रजत जयन्ती ग्रन्थमाला-17

आधुनिक काल का संस्कृत गद्य साहित्य

कलानाथ शास्त्री

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

पुरोवाक्

'योऽनूचानः स नो महान्'—इस उद्घोष के अनुरूप संस्कृत के संरक्षण, संवर्धन तथा प्रचार-प्रसार के लिए सन्नद्ध राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान अपना रजतजयन्ती वर्ष पूर्ण कर रहा है, यह समस्त संस्कृतानुरागियों के लिए अपार हर्ष का विषय है। संस्कृत की प्राचीन शास्त्रीय परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने एवं राष्ट्रीय ऐक्य की भावना विकसित करने में संस्थान का योगदान संस्कृत जगत् में सुविदित है।

इस शुभ अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों के मूर्धन्य संस्कृत मनीषियों के द्वारा विविध शास्त्रीय विषयों पर रचित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ **रजत जयन्ती ग्रन्थमाला** के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

आधुनिक काल का गद्य साहित्य नामक यह ग्रन्थ राजस्थान संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष प्रख्यात साहित्यकार **डॉ० कलानाथ शास्त्री** द्वारा प्रणीत है। इसमें विद्वान् लेखक ने आधुनिक गद्य साहित्य का सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया है। **रजत जयन्ती ग्रन्थमाला** के लिए इस ग्रन्थ का प्रणयन कर डॉ० शास्त्री ने हमारा उत्साहवर्धन किया है। इसके लिए हम हृदय से उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

रजतजयन्ती महोत्सव के विविध शैक्षिक अनुष्ठानों, विशेषतः ग्रन्थमाला के आयोजन प्रकाशन आदि कार्यों में सक्रिय भूमिका निभाने वाले हमारे सहयोगी डॉ० सवितापाठक, डॉ० रा० देवनाथन् आदि साधुवाद के पात्र हैं।

नागप्रकाशक ने अल्प समय में अथक परिश्रम कर रजतजयन्ती महोत्सव के समापन समारोह में ग्रन्थ को विमोचनार्थ प्रस्तुत कर हमारा सहयोग किया है। इसके लिए हम उनके आभारी हैं।

दि० ११-१०-९५

कमलाकान्तमिश्र
निदेशक
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

विषय सूची

प्रस्तावना	i
पूर्वपाठिका	vii
लघु कथा	१
उपन्यास	३८

तारिणीकान्त चक्रवर्ती की कहानी पुष्पांजलि (परिषत्पत्रिका १९२४) में लेखक सीधे सीधे इस बात की शिक्षा देता प्रतीत होता है कि मद्यपान, दुश्चरित्रता आदि किस प्रकार अधःपतन की ओर ले जाते हैं। इसी प्रकार "आख्यायिका" शीर्षक कथा (परिषत्पत्रिका १९३३-३४) भी उपदेश का संदेश लेकर अवतरित हुई है। बंगाल की विनोदप्रधान तथा व्यंग्यपरक शैली से प्रभावित अनेक कहानियों में घटनाओं और परिवेश की नूतनता, काल्पनिकता तथा दृश्य योजना ने नये आयाम छुए हैं। उदाहरणार्थ वेणुधर तर्कतीर्थ की काल्पनिक कथा 'यमपुरी-पर्यटनम्' (परिषत्पत्रिका १९२४-२९) में स्वप्न में यमपुरी का भ्रमण करते हुए लेखक क्या क्या देखता है इस कथातन्तु में देश में फैले सभी कदाचारों पर बहुत अच्छे व्यंग्यात्मक प्रहार किय गये हैं- दहेज प्रथा, अशिक्षा, शिक्षाजगत् के भ्रष्टाचार, हड़तालें, राजनीति, फैशनपरस्ती आदि के कारण यमपुरी में क्या क्या भुगतना पड़ता है यह बतलाते हुए लेखक बंगला की शैली में नये नये प्रयोग भी करता है जैसे "चक्षुषा सर्षपकुसुमं द्रष्टव्यम्" "भारस्योपरि शाकगुच्छः" एकपदे उपस्थातव्यम्' आदि। इसी हास्य व्यंग्य शैली में लेखक वहां यह प्रश्न उठा देता है कि यमराज का क्षेत्राधिकार केवल हिन्दुओं पर ही है या म्लेच्छों पर भी (जैसे अंग्रेज़)। इस पर यमराज भी हतप्रभ रह जाते हैं। लेखक को यह काम दिया जाता है कि वह तुरन्त भारतदेश में जाकर वहां पंडितों की व्यवस्था-सभा बुलाए और इस पर धर्मनिर्णय करवाए। तभी कहानी समाप्त हो पाती है।

बंगला से प्रभावित कहानियों की यह विशेषता उल्लेखनीय है कि उनमें उपन्यास की तर्ज पर परिच्छेद-विभाजन किया मिलता है। कहीं कहीं ऐसी कहानियों में परिच्छेदों को १,२,३,४, आदि क्रमांक देकर विभाजित किया गया है, कहीं उनके भी शीर्षक दे दिये गये हैं। इस दृष्टि से उपन्यास में और कथा में कोई बड़ा भेद नहीं है, यह एहसास इन्हें देखने से होता है। कहानियों का आकार छोटा हो और उपन्यास का बड़ा, केवल यही विभेदक मानकर चलना भी भ्रान्ति ही होगी। आज का साहित्य दोनों में तात्विक भेद मानता है। जहां एक जीवन का, युग का या किसी स्थिति विशेष-देश, परिवार आदि का संपूर्ण चित्रण हो उसे उपन्यास और जहां कुछ घटनाओं का, जीवन की या किसी अन्य इकाई की कुछ स्थितियों मात्र का चित्रण हो उसे लघुकथा माना जाता है। उपन्यास का आकार छोटा होने पर भी पूरे जीवन चित्र को उपन्यास ही कहा जाएगा और कुछ स्थितिविशेषों का चित्रण उससे भी बड़े आकार का क्यों न हो, कहानी ही कहा जायेगा।

इस दृष्टि से भट्टयुग की संस्कृत कथाओं में जहां परिच्छेद विभाजन है या उन्हें शीर्षक भी दे दिये गये हैं, उपन्यास मान लेने की भ्रान्ति स्वाभाविक है।

(12)

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

ए-४०, विशाल एन्कलेव, राजा गार्डन,
नई दिल्ली-११००२७ (भारत)